7. Describe the Nyāya argument for the existence of God critically evaluate mimāṁsā's Standpoint.

ईश्वर के अस्तित्त्व के लिए न्याय के तर्क का विवरण दीजिए तथा मीमांसा के दृष्टिकोण का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए ।

8. Write Short Notes any two.
कोई दो संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

(i) Philosophical Debate

दार्शनिक वाद-विवाद

(ii) Prakṛti - Sāṁkhya

प्रकृति-सांख्य

(iii) Rāmānuja – refutation of Māyā

रामानुज-माया का खण्डन

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....
आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 3197 **I**

Unique Paper Code : 2104000015

Name of the Paper : Philosophical Debates Indian (GE)

Name of the Course : **Generic Elective : Philosophy**

Semester/Annual : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

Instructions for Candidates

1. Write your Roll. No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Attempt **any five** questions.
3. **All** questions carry equal marks.
4. Answer may be written either in English or Hindi: But the same medium should be used throughout the paper.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

3. **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।

4. इस प्रश्न पत्र का उत्तर अंग्रेजी या हिन्दी किसी एक भाषा में दीजिए, लेकिन सभी उत्तर का माध्यम एक ही होना चाहिए ।

1. What do you understand by Carvaka's theory of consciousness ? Give refutation in view of Sāṁkhya Philosophy.

चार्वाक के चेतना सिद्धान्त से आप क्या समझते हैं? सांख्य दर्शन के परिदृश्य में आलोचना की व्याख्या कीजिए।

2. Critically explain the Jain's Syādvād with special reference to the criticism of Buddhism.

जैन के स्यादवाद् की बौद्ध दर्शन के संदर्भ में आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए ।

3. Explain how Sāṁkhya rejects Jain's theory of Anekantvād.

जैन के अनेकान्तवाद को शंकर कैसे अस्वीकार्य करते है व्याख्या कीजिए ।

4. Critically examine the dualism of Sāṁkhya philosophy in the context of Sāṁkhya's Advaita.

शंकर के अद्वैतवाद के संदर्भ में सांख्य दर्शन के द्वैतवाद का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए ।

5. Evaluate the critical view of Ramanuja in the reference of the concept of Brahman given by Sāṁkhya.

शंकर द्वारा दिए गए ब्रह्म की अवधारणा के संदर्भ में रामानुज के आलोचनावादी मत का मूल्यांकन कीजिए ।

6. Discuss the concept of momentariness of Buddhist philosophy and give critical view of Nyāya philosophy.

बौद्ध दर्शन के क्षणिकवाद की अवधारणा की चर्चा कीजिए तथा न्याय दर्शन का आलोचनात्मक मत दीजिए ।